रविवार 1 मार्च, 2020

विषय — मसीह यीशु

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 12 : 46

"मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।"- मसीह यीशु

उत्तरदायी अध्ययन: **यूहन्ना 3 : 16-21**

16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

18 जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

19 और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे।

20 क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।

21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. लूका 2 : 14

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

14 कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो॥

2. यशायाह 11 : 1-5

1 तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी।
2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी।
3 ओर उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा॥ वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा;
4 परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा।
5 उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी॥

3. मत्ती 9 : 35

35 और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उन की सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

4. मत्ती 10 : 1, 5-8, 16-20, 34-39

1 फिर उस ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें॥
5 इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा कि अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना।
6 परन्तु इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।
7 और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
8 बीमारों को चंगा करो: मरे हुओं को जिलाओ: कोढियों को शुद्ध करो: दुष्टात्माओं को निकालो: तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।
16 देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेडियों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की नाईं भोले बनो।
17 परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे, और अपनी पंचायत में तुम्हें कोड़े मारेंगे।

18 तुम मेरे लिये हाकिमों ओर राजाओं के साम्हने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये पहुंचाए जाओगे।
19 जब वे तुम्हें पकड़वाएंगे तो यह चिन्ता न करना, कि हम किस रीति से; या क्या कहेंगे: क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा।
20 क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है।
34 यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं।
35 मैं तो आया हूं, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग कर दूं।
36 मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे।
37 जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।
38 और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।
39 जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।

5. मत्ती 11 : 2-6, 28, 29

2 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उस से यह पूछने भेजा।
3 कि क्या आनेवाला तू ही है: या हम दूसरे की बाट जोहें?
4 यीशु ने उत्तर दिया, कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो।
5 कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।
6 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।
28 हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
29 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।

6. मत्ती 12 : 14, 15

14 तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें?
15 यह जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लोग उसके पीछे हो लिये; और उस ने सब को चंगा किया।

7. मत्ती 21 : 12-16, 31 (वास्तव में)

12 यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचने वालों की चौकियां उलट दीं।
13 और उन से कहा, लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।
14 और अन्धे और लंगड़े, मन्दिर में उसके पास लाए, और उस ने उन्हें चंगा किया।
15 परन्तु जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्भुत कामों को, जो उस ने किए, और लड़कों को मन्दिर में दाऊद की सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित होकर उस से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?
16 यीशु ने उन से कहा, हां; क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा, कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तु ने स्तुति सिद्ध कराई?
31 यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेने वाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।

8. यूहन्ना 14 : 27

27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।

9. यूहन्ना 16 : 33

33 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीन लिया है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 40 : 31-7

ईसाई धर्म की प्रकृति शांतिपूर्ण और धन्य है, लेकिन राज्य में प्रवेश करने के लिए, आशा के लंगर को शकीना में सामग्री के घूंघट से परे डाल दिया जाना चाहिए जिसमें यीशु हमारे जाने से पहले चला गया है; और सामग्री से परे यह उन्नति धर्मियों की खुशियों और विजय के साथ-साथ उनके दुखों और कष्टों से भी होनी चाहिए। अपने गुरु की तरह, हमें भौतिक अर्थों में होने के आध्यात्मिक अर्थ से प्रस्थान करना चाहिए।

2. 19 : 12-16

मास्टर ने पूरी सच्चाई नहीं बोलने के लिए मना किया, यह घोषित करते हुए कि क्या बीमारी, पाप और मृत्यु को नष्ट कर देगा, हालांकि उनके शिक्षण ने घरों में विचरण किया, और भौतिक विश्वासों को शांति नहीं, बल्कि एक तलवार के रूप में लाया।

3. 20 : 6-13, 16-23

यीशु ने कर्मकांड के पुजारी और पाखंडी फरीसी से कहा, "कि महसूल लेने वाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।" यीशु के इतिहास ने एक नया कैलेंडर बनाया, जिसे हम ईसाई युग कहते हैं; लेकिन उन्होंने कोई पूजा पाठ नहीं किया। वह जानता था कि पुरुषों को बपतिस्मा दिया जा सकता है, यूचरिस्ट का हिस्सा बन सकता है, पादरी का समर्थन कर सकता है, सब्त का पालन कर सकता है, लंबी प्रार्थना कर सकता है, और फिर भी कामुक और पापी हो सकता है।

"तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था," शाप के लिए आशीर्वाद वापस करके, उसने नश्वर को खुद के विपरीत, यहां तक कि भगवान की प्रकृति को सिखाया; और जब त्रुटि ने सत्य की शक्ति को महसूस किया, तो महापुरुष ने क्रॉस और क्रॉस का इंतजार किया। फिर भी उन्होंने यह नहीं कहा कि ईश्वरीय आदेश का पालन करना और ईश्वर पर भरोसा रखना, यह जानते हुए भी पाप से पवित्रता के मार्ग को बदलना और पीछे हटाना है।

4. 133 : 19-28

यहूदी धर्म ईसाई धर्म का विरोधी था, क्योंकि यहूदी धर्म एक राष्ट्रीय या जनजातीय धर्म के सीमित रूप को दर्शाता है। यह एक परिमित और भौतिक प्रणाली थी, जो ईश्वर, मनुष्य, सेनेटरी विधियों और एक धार्मिक पंथ के विषय में विशेष सिद्धांतों पर आधारित थी। कि उसने "खुद को भगवान के बराबर बनाया", उसके खिलाफ यहूदी आरोपों में से एक था जिसने आत्मा की नींव पर ईसाई धर्म को लगाया, जिसने सिखाया कि वह पिता से प्रेरित था और भगवान के बाहर कोई जीवन, बुद्धि, और न ही पदार्थ को पहचानता था।

5. 26 : 28-9

हमारे मास्टर ने कोई विचार, सिद्धांत या विश्वास नहीं सिखाया। यह सभी वास्तविक लोगों का दिव्य सिद्धांत था जो उन्होंने सिखाया और अभ्यास किया। ईसाई धर्म का उनका प्रमाण धर्म और पूजा का कोई रूप या प्रणाली नहीं था, लेकिन क्रिश्चियन साइंस, जो जीवन और प्रेम के सामंजस्य को दर्शाता है। यीशु ने जॉन द बैप्टिस्ट को एक संदेश भेजा, एक प्रश्न से परे जो यह साबित करने के लिए था कि मसीह आया था: "कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो। कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।" दूसरे शब्दों में:

जॉन को बताएं कि दैवीय शक्ति का प्रदर्शन क्या है, और वह तुरंत महसूस करेगा कि ईश्वर मसीहाई काम में एक शक्ति है।

6. 27 : 17-21

यीशु के दृष्टांत जीवन को पाप और मृत्यु के साथ कभी भी मेल नहीं खाते के रूप में समझाते हैं। उन्होंने भौतिक ज्ञान के मूल में विज्ञान की कुल्हाड़ी को रखा, कि वह पैंटीवाद के झूठे सिद्धांत को काटने के लिए तैयार हो सकता है, - कि ईश्वर, या जीवन, सामग्री में है।

7. 25 : 13-21

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। यीशु ने ईश्वर के आदर्श को किसी भी ऐसे व्यक्ति की तुलना में बेहतर प्रस्तुत किया जिसकी उत्पत्ति कम आध्यात्मिक थी। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के द्वारा, उसने आध्यात्मिक रूप से सभी दूसरों के सिद्धांत का प्रदर्शन किया। अत: उसके पालन की शक्ति, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

8. 28 : 15-6

न तो यीशु की उत्पत्ति, चरित्र, और न ही यीशु के कार्य को आम तौर पर समझा गया था। भौतिक दुनिया ने उनके स्वभाव के एक हिस्से को सही नहीं मापा। यहां तक कि उनकी धार्मिकता और पवित्रता ने भी पुरुषों को यह कहने में बाधा नहीं दी: वह एक अतिभक्षी और अशुद्ध का दोस्त है, और बिल्जेबब उसका संरक्षक है।

हे तुम क्रिश्चियन शहीद हो, याद रखो, यह पर्याप्त है यदि तुम अपने आप को अपने मास्टर के पैरों के फीते खोलने लायक पाते हो! यह धर्म की प्रकृति की गलती है कि यह विचार करना कि धार्मिकता के लिए उत्पीड़न अतीत से संबंधित है, और यह कि ईसाई धर्म आज दुनिया के साथ शांति पर है क्योंकि यह संप्रदायों और समाजों द्वारा सम्मानित किया जाता है। त्रुटि खुद को दोहराता है। पैगंबर, शिष्य, और प्रेरितों द्वारा सामना किए गए परीक्षणों, "जिनके लिए दुनिया योग्य नहीं थी", किसी न किसी रूप में जो सत्य के प्रत्येक अग्रणी का इंतजार करते हैं।

समाज में बहुत अधिक पशु साहस है और पर्याप्त नैतिक साहस नहीं है। ईसाईयों को देश और विदेश में त्रुटि के खिलाफ हथियार उठाने चाहिए उन्हें स्वयं में और दूसरों में पाप से जूझना चाहिए, और इस युद्ध को तब तक जारी रखें जब तक वे अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेते। यदि वे विश्वास बनाए रखेंगे, तो उनके पास आनन्द का ताज होगा।

9. 265 : 31-5

अर्थ की वेदनाएँ नमस्कार हैं, यदि वे झूठे सुखदायक विश्वासों को मिटा देते हैं और भावनाओं को आत्मा से आत्मा तक पहुँचाते हैं, जहाँ ईश्वर की रचनाएँ अच्छी हैं, "हृदय को आनन्दित करता है।" यह विज्ञान की तलवार है, जिसके साथ सत्य त्रुटि को नष्ट करता है, भौतिकता मनुष्य के उच्च व्यक्तित्व और भाग्य को स्थान देती है।

10. 326 : 3-5, 12-22

यदि हम मसीह, सत्य का पालन करना चाहते हैं, तो यह भगवान की नियुक्ति के रास्ते में होना चाहिए। यीशु ने यह कहा: "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा।"

हमें भौतिक प्रणालियों की नींव का त्याग करना चाहिए, केवल समय-सम्मानित, अगर हम अपने एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में मसीह को प्राप्त करेंगे। आंशिक रूप से नहीं, लेकिन पूरी तरह से, नश्वर मन का महान उपचारक शरीर का उपचारकर्ता है।

जीवित रहने का उद्देश्य और मकसद अब हासिल किया जा सकता है। यह बिंदु जीत गया, जैसा कि आपको शुरू करना चाहिए, आपने किया है। आप क्रिश्चियन साइंस के अंक-तालिका में शुरू कर चुके हैं, और गलत इरादे के अलावा कुछ भी आपकी उन्नति में बाधा नहीं बन सकता है। सच्चे इरादों के साथ काम करने और प्रार्थना करने से, आपके पिता आपके लिए रास्ता खोलेंगे। "किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो?"

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6